



## आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'हिमालयन क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव' कार्यक्रम पर रिपोर्ट

आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'हिमालयन क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव' विषय पर हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा 28 दिसम्बर, 2022 को कार्यक्रम का आयोजन संस्थान परिसर में किया। इस अवसर पर डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ एवं प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग ने "हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और चुनौतियाँ" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने मौसम में होते बदलावों पर चिंता व्यक्त की और कहा कि बदलते मौसम के कारण एग्रोकलाईमैटिक जोन में बदलाव हो रहा है। उन्होने नवंबर – दिसंबर में होने वाली बर्फवारी का परिस्थितिकी में महत्व बताया तथा बढ़ते शीतकालीन पर्यटन के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण ही ट्री-लाईन भी उचाई वाले क्षेत्रों कि ओर बढ़ रही है। संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. वनीत जिष्टू, वैज्ञानिक-ई एवं मुख्य वक्ता ने "हमारा गर्म ग्रह (Our Warming Planet)" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग, अंतरराष्ट्रीय संधि क्योटो प्रोटोकॉल एवं पेरिस समझौता से प्रतिभागियों को अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि प्रतिबद्धता, भागीदारी, स्वस्थ आदतें, पर्यावरण जागरूकता, दक्षता और नवीनता जैसे पाँच मुख्य कदमों से जलवायु परिवर्तन को हराया जा सकता है। इस अवसर पर डॉ० संदीप शर्मा, निदेशक, हि०व०अ०स०, शिमला ने जादव मोलाई पायेंग, पर्यावरण कार्यकर्ता एवं पुरस्कार पद्म श्री (2015) के बारे में जानकारी दी, जिन्हें भारत के वन पुरुष के रूप में भी जाना जाता है। डॉ० शर्मा ने इनका उदाहरण देकर प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया और कहा कि किस प्रकार उन्होंने अकेले 30-35 वर्षों तक लगातार मेहनत करके ब्रह्मपुत्र नदी के सैंडबार पर पेड़ लगाए और उसकी देखभाल की और इसे एक वन अभ्यारण्य में बदल दिया। उनके द्वारा तैयार 550 हेक्टेयर क्षेत्र का 'मोलाई वन' जंगल जोरहाट, असम के कोकिलामुख के पास स्थित है। उन्होंने कहा कि हमें भी यथा संभव अपने आस पास जितना हो सके खाली पड़े भू-क्षेत्र में अधिक से अधिक पेड़ लगाने का प्रयास करना चाहिए। इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों एवं फील्ड में कार्यरत कर्मचारियों सहित लगभग 80 लोगों ने भाग लिया।

Under #Azadi Ka Amrit Mahotsav, an awareness programme on the topic "Impact of climate change in the Himalayan region" was organized by HFRI in the institute on 28<sup>th</sup> December, 2022. On this occasion, Dr. Jagdish Singh, Scientist-F & Head Extension division delivered a talk on Effects of climate change and challenges in the Himalayan Region. He expressed concern over the changes in the weather and said that due to the changing weather, the zone of species occurrence is shifting. He further elaborated about the importance of snowfall in November-December in ecology and also talked about growing winter tourism. Dr. Vaneet Jishtu, Scientist-E & keynote speaker talked about "Our Warming Planet". He apprised the participants about Global Warming, International Treaty Kyoto Protocol and Paris Agreement. He briefed about the five main steps that can be taken to beat climate change. These include commitment, participation, healthy habits, environmental awareness, efficiency and innovation. He said that we can learn continuously, adapt ourselves according to the situation and live a happy life accordingly. Dr. Sandeep Sharma, Director, HFRI Shimla informed about Jadav Molai Payeng, an environmental activist & Padma Shree Awardee and who is also known as the Forest Man of India. He encouraged the participants by citing his example that how he single-handedly worked tirelessly for 30-35 years to plant trees and take care of the sandbar in the Brahmaputra River and which turn into a forest reserve known as 'Molai Forest' in Kokilamukh, Jorhat, Assam covering an area of 550 ha. Around 80 people from the institutes viz., scientists, officers, employees, research scholars and field staff attended in the programme.

Glimpses







Media Coverage

# वन अनुसंधान संस्थान में कार्यशाला

स्टाफ रिपोर्टर-शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के विस्तार प्रभाग प्रभागाध्यक्ष वैज्ञानिक-एफ डाक्टर जगदीश सिंह ने कहा कि बदलते मौसम के कारण एग्रोकलाईमैटिक जोन में बदलाव हो रहा है। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण ही ट्री-लाइन भी उचाई वाले क्षेत्रों कि ओर बढ़ रही है। वह आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत हिमालयन क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव विषय पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में एक दिवसीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और चुनौतियां विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने मौसम में होते बदलावों पर चिंता



व्यक्त की और उन्होंने नवंबर-दिसंबर में होने वाली बर्फबारी का परिस्थितिकी में महत्व बताया तथा बढ़ते शीतकालीन पर्यटन के बारे में भी बात की। संस्थान के वैज्ञानिक डाक्टर वनीत जिष्टू, वैज्ञानिक-ई मुख्य वक्ता ने हमारा गर्म ग्रह विषय पर व्याख्यान दिया।

उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग, अंतरराष्ट्रीय संधि क्योटो प्रोटोकॉल पेरिस समझौता से प्रतिभागियों को अवगत करवाया। उन्होंने प्रतिबद्धता, भागीदारी, स्वस्थ

आदतें, पर्यावरण जागरूकता, दक्षता और नवीनता जैसे जलवायु परिवर्तन को हराने वाले पांच मुख्य कदम के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हम लगातार सीख सकते हैं, स्वयं को परिस्थिति के हिसाब से अनूकूल कर सकते हैं, उसी हिसाब से खुशहाल जीवन जी सकते हैं। इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों एवं फील्ड में कार्यरत कर्मचारियों लगभग 80 लोगों ने भाग लिया।

\*\*\*\*\*